तारशी (टॉकिंग अबाउट रीप्रोडक्टिव एण्ड सेक्स्यूअल हैल्थ इसूज़)
11 मथुरा रोड, पहली मंजिल, जंगपुरा बी., नई दिल्ली 110 014, भारत
फोन एवं फैक्सः +91-11-2437 9070, +91-11-2437 9071
ईमेलः tarshi@vsnl.com वेबसाइटः www.tarshi.net, www.asiasrc.org
TARSHI तारशी हैल्पलाइनः +91-11-2437 2229

यौनिकता पर बातें

तारशी हैल्पलाइन से प्राप्त जाँच–परिणामों की रिपोर्ट

सर्वाधिकार तारशी 2007
यह प्रकाशन शैक्षिक उद्देश्यों एवं सीमित वितरण के लिए है।

यौनिकता पर बातें

तारशी हैल्पलाइन से प्राप्त जाँच–परिणामों की रिपोर्ट

परिचय

मीडिया के संदेशों में मुखर, अधिकांश विज्ञापन रणनीतियों का हिस्सा, सार्वजनिक स्थानों में अपरिहार्य, चाहे वह सार्वजनिक यातायात हो या सार्वजनिक विज्ञापन–बोर्ड/होर्डिंग – टूथपेस्ट से लेकर टायरों तक, सभी तरह की वस्तुओं के लिए ग्राहकों को लुभाने में – भारतीय महानगरों में लोकप्रिय मीडिया द्वारा यौनिकता की छवि अधिकाधिक रूप से आपके सामने एकदम प्रत्यक्ष होने की श्रेणी में है।

अधिकांश लोगों के दैनिक जीवन का एक आत्मीय अंश होने के बावजूद, यौनिकता को अभी भी एक धुंधले क्षेत्र में रखा जाता है – इसके बारे में कभी प्रत्यक्ष रूप में बात नहीं की जाती, इसका नाम केवल अप्रत्यक्ष रूप से ही लिया जाता है। इसे हमारे निजी क्षेत्र का अंश समझा जाता है हालाँकि अधिकतर हम जो करते हैं उसमें यौनिकता की उपस्थिति अंतर्निहित होती है, लेकिन औसत व्यक्ति शायद ही कभी इसे स्पष्ट रूप से कहता है। यौनिकता गोपनीयता और शर्म की चादर में लिपटा हुआ शब्द है। बहरा कर देने वाली चुप्पी के कारणों के लिए संस्कृति, नैतिकताओं और परम्पराओं की दुहाई दी जाती है। जब कभी इसके बारे में बात की भी जाती है – चाहे वह दोस्तों के साथ हो, परिवार के साथ या समाज में – बात हमेशा इसके नकारात्मक और हिंसात्मक पहलुओं की ही की जाती है। यौनिकता को शायद ही कभी सकारात्मक रूप से देखा जाता है।

यौनिकता का चित्र बहुआयामी है। एक ओर यौनिकता के इर्दगिर्द सांस्कृतिक और सामाजिक चुप्पी है, तो दूसरी ओर मीडिया और संकेतों के द्वारा यौनिकता का उल्लेख होता है। वर्तमान में जिन ज्ञात परिदृश्यों में यौनिक व्यवहार किए जाते हैं उनकी बहुतायत चित्र को और अधिक जटिल बनाते हैं।

भारत में जल्दी विवाह करने का चलन है (राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण 2005–2006 दिखाता है कि 20 और 24 वर्ष आयु के बीच की 44.5% महिलाओं का विवाह 18 वर्ष की आयु में हो जाता है और 15 से 19 वर्ष की आयु के बीच में 16% महिलाएं माँ बन चुकी होती हैं), फिर भी किशोरों की यौनिकता को नकारा जाता है। यौनिकता शिक्षा को 'पश्चिम की देन' समझा जाता है। जहाँ 'पारिवारिक जीवन' और 'जीवन कौशल शिक्षा' की बात आती है वहाँ इन कार्यक्रमों के सांस्कृतिक रूप से उचित और संवेदनशील होने के बारे में काफी चिंता होती है। सांस्कृतिक संवेदनशीलता का आशय अधिकतर यौन के बारे में बात न करना ही होता है। यौनिकता के इर्दगिर्द बातचीत करना वर्जित है और यह कारण भी यौनिक हिंसा की घटनाओं में योगदान देता है। उदाहरण के लिए, राजीव आचार्य और शिरीन जे. जीजीभॉय द्वारा 'एडवर्स हैल्थ आउटकम्स् ऑफ फिज़ीकल एन्ड

सेक्सुअल वॉयलेन्स विदीन मैरेजः एक्सपीरीयन्सेस ऑफ यंग वूमेन इन महाराष्ट्र, इंडिया'। शीर्षक पर पॉपुलेशन काउन्सिल, भारत, के एक अध्ययन में पाया गया कि जिन महिलाओं की मारपीट होती है या जिनके साथ यौन के लिए ज़बरदस्ती की जाती है, अन्य महिलाओं के मुकाबले उनमें यौनिक एवं प्रजनन स्वास्थ्य समस्याओं के अनुभव काफी अधिक होते हैं। इसके अतिरिक्त, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा अधिकृत भारत में बाल दुर्व्यवहार, 2007 के अध्ययन से सामने आया कि उत्तर देने वाले 12,477 बच्चों में से, 53% ने बताया कि उन्होंने किसी एक प्रकार या एक से अधिक प्रकार का यौनिक दुर्व्यवहार अनुभव किया है। ज़ाहिर है, युवाओं के लिए जेंडर और यौनिक एवं प्रजनन अधिकार के तत्वों समेत जीवन कौशल और यौनिकता शिक्षा पर नीति और हस्तक्षेप अनिवार्य हैं।

भारत में 80% से अधिक एच.आई.वी. प्रसार का मार्ग यौनिक है, इस तथ्य के बावजूद, यौन की वास्तविकताओं पर बहुत कम ध्यान दिया जाता है। एच.आई.वी. प्रसार रोकथाम के अधिकांश प्रयासों में, यदि यौन के बारे में बात होती भी है, तो यह केवल यौन कार्य या अनेक यौन साथियों तक सीमित रहती है – जिसमें यह भाव अंतर्निहित रहता है कि ये अवांछनीय, अत्यधिक जोखिमपूर्ण, और एक तरह से यौनिकता की अजीब या असामान्य अभिव्यक्ति हैं। 'आम' यौनिक अभ्यास में लोगों को जो जोखिम होते हैं उनके बारे में क्या कहेंगे? कभी–कभार 'चूक होना', अचानक 'भावों में बह जाना', पड़ोसी के साथ संबंध होना – इन सबका क्या ?

एक पूरी पीढ़ी का विकास एड्स के युग में हो रहा है। युवा यौनिकता के बारे में क्या सीख रहे हैं? यौनिकता शिक्षा को स्कूल के पाठ्यक्रम में आरंभ किया जाना चाहिए या नहीं, इस बात पर काफी बहस हुई है। माता–पिता के साथ–साथ स्कूल के अध्यापक/अध्यापिकाएं यौनकता के बारे में खुल कर बात करने में शर्म महसूस करते हैं। यदि कोई यौनिकता शिक्षा दी भी जाती है, तो जीव–विज्ञान के 'मानव प्रजनन तंत्र' पाठ में। इस प्रासंगिक पाठ को अक्सर अंत के लिए छोड़ दिया जाता है या बिल्कुल पढ़ाया ही नहीं जाता। इसके परिणामस्वरूप, बुनियादी शारीरिक क्रियाकलापों के बारे में भी भयंकर अज्ञानता होती है। यौनिकता के बारे में ज्ञान के अभाव के कारण, लोग असुरक्षित यौनिक व्यवहारों में शामिल होते हैं और स्वयं को तथा अपने साथियों को जोखिम में डालते हैं।

तारशी हैल्पलाइन 1996 में लोगों को यौनिकता, यौनिक एवं प्रजनन स्वास्थ्य पर जानकारी, परामर्श एवं रेफरल प्रदान करने के लिए स्थापित की गई, जिससे वे विवेकपूर्ण निर्णय ले सकें। तारशी भारत, नई दिल्ली में स्थित एक गैर सरकारी संस्था है और यह सोसाइटीज़ रजिस्ट्रेशन एक्ट 1997 के तहत पंजीकृत है। हैल्पलाइन ने लगभग 60,000 फोन कॉलों को संबोधित किया है। यह रिपोर्ट हैल्पलाइन पर आई कॉलों के रिकार्ड किए गए आंकड़ों के आरंभिक विश्लेषण के परिणाम को प्रस्तुत करती है।

टेलिफोन हैल्पलाइन

तारशी हैल्पलाइन यौनिकता, यौनिक और प्रजनन स्वास्थ्य एवं अधिकारों के अलग–अलग मुद्दों पर जानकारी, परामर्श और रेफरल प्रदान करती है। हैल्पलाइन में प्रशिक्षित परामर्शदाताओं को लिया जाता है और इसका मार्गदर्शन एक प्रशिक्षित क्लीनिकल मनोवैज्ञानिक द्वारा किया जाता है। हैल्पलाइन सेवा हिन्दी और अंग्रेजी दोंनों भाषाओं में उपलब्ध है; यह निःशुल्क है, गोपनीयता (कॉनफिनडेनशियेलिटि) और गुमनामी (ऐनॉनिमिटि) की गारंटी देती है।

तारशी हैल्पलाइन पर फोन करने वालों का विवरण और जिन सरोकारों के लिए वे फोन करते हैं, वे कहीं अधिक स्पष्टता से इस बात की ओर संकेत करते हैं कि तारशी हैल्पलाइन – यौनिक खुशहाली और एक आनन्ददायक एवं सकारात्मक यौनिकता का अधिकार सभी के लिए – अपने इस विज़न की ओर काम करने में सफल रही है। हम लोगों के जीवन में यौनिक एवं प्रजनन विकल्पों के विस्तार लाने की दिशा में कार्य करते हैं। महिलाओं और युवाओं तथा उनके यौनिक और स्वास्थ्य एवं अधिकारों पर ध्यान केंद्रित करने के साथ, हमारे कार्यक्रम, सभी आयु समूहों, समुदायों, वर्गों और यौनिक अभिरुचियों के लोगों को संबोधित करते हैं। यौनिकता निजी स्वतंत्रता की बुनियाद में अंतर्निहित है और यौनिक खुशहाली को पोषित करने वाली सामाजिक–सांस्कृतिक परिस्थितियों की मौजूदगी के लिए एक व्यापक जन स्तर पर बातचीत करना महत्वपूर्ण है।

हैल्पलाइन पर हर कॉल को लिख कर रिकार्ड किया जाता है, ताकि हैल्पलाइन सेवा की उच्च गुणवत्ता कायम रखी जा सके, जो कॉलर दोबारा फोन करते हैं उन्हें उच्च दर्जे का परामर्श दिया जा सके और भारत के सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेश के अंदर यौनिकता और प्रजनन स्वास्थ्य एवं अधिकारों के मुद्दों पर गहरी समझ बनाई जा सके। फोन करने वालों की गुमनामी और गोपनीयता को सुरक्षित रखने के लिए फोन की बातचीत को टेप पर रिकार्ड नहीं किया जाता। हालाँकि, परामर्शदाता हर कॉल के बाद बातचीत पर तुरंत महत्वपूर्ण नोट बनाने के लिए प्रशिक्षित हैं। फोन करने वाले जिन मुद्दों पर परामर्श मांगते हैं, उनका दस्तावेज़ीकरण करना लोगों के जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में यौनिकता किस प्रकार प्रयोग की जाती है इस विषय पर भविष्य में शोध तथा विश्लेषण करने के लिए आंकड़े भी प्रदान करता है। कॉलों से प्राप्त जानकारी तारशी जिन गतिविधियों में सम्मिलित होती है उन्हें सूचित और मार्गदर्शित करती है।

वर्तमान में हैल्पलाइन सप्ताह में तीन दिन, सोमवार से बुधवार, सुबह 10 बजे से शाम 4 बजे तक कार्य करती है। आरंभिक वर्षों में, यह सेवा सोमवार से शुक्रवार, सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक उपलब्ध थी। कई वर्षों से, हैल्पलाइन का प्रचार एफ.एम. रेडियो, केबल टी.वी., अखबार और पत्रिकाओं में लेखों और तारशी की वेबसाइट के माध्यम से किया गया है। विज्ञापन प्रचार का सबसे प्रभावशाली तरीका एफ.एम. रेडियो रहा है। इंटरनेट भी लोगों तक पहुँचने का तीव्र माध्यम बनता जा रहा है और हाल ही में हमें तमिल नाडु, असम और कर्नाटक जैसे दूर दराज़ स्थानों से लोगों के फोन आए हैं, जिन्हें हमारा फोन नम्बर इंटरनेट से प्राप्त हुआ।

कॉलरों का सामाजिक-जनसांख्यिकीय विवरण

टेलिफोन हैल्पलाइन विशेषरूप से महिलाओं और युवाओं के लिए है। हालाँकि जहाँ हैल्पलाइन में फोन करने वाले अधिकांश लोग युवा हैं, 20% से थोड़ी कम महिलाएं हैं। हैल्पलाइन ने 14 फरवरी 1996 और 10 अक्तूबर 2007 के बीच 59,631 कॉलें रिकार्ड की हैं, जिनमें से 57,773 का विश्लेषण किया गया है। आंकड़ों के विश्लेषण के उद्देश्य से जो 13,885 ब्लैंक/अस्पष्ट कॉलें थीं जिन्हें कॉलों की कुल संख्या में से हटा दिया गया है।

फोन करने वालों के बारे में

इस रिपोर्ट के लिए कुल 43,888 कॉलों का विश्लेषण किया गया है।

भाषा

- केवल हिन्दी बोलने वाले – 30,478 (69.4%)
- केवल अंग्रेजी बोलने वाले – 8,441 (19.2%)
- दोनों भाषाएं बोलने वाले – 4,776 (10.8%)

लिंग

- पुरुषों द्वारा किए गए कॉलों की संख्या – 35,924 (81.9%)
- महिलाओं द्वारा किए गए कॉलों की संख्या – 7,798 (17.8%)

150 से अधिक कॉल ट्रॉंसजेंडर और ट्रॉंससेक्सयुअल लोगों से/मुद्दों के बारे में (0.3%) प्राप्त हुए।

हैल्पलाइन पर महिलाओं के मुकाबले पुरुष अधिक फोन करते हैं, यह तथ्य इस वास्तविकता को दर्शाता है कि सेवाओं के बारे में पुरुषों को महिलाओं से बेहतर जानकारी और पहुँच प्राप्त है।

हालाँकि, काफी सारी महिलाएं स्वयं हैल्पलाइन पर फोन नहीं करतीं, कई बार उनकी ओर से उनके पुरुष साथी हैल्पलाइन सेवा पर फोन करते हैं। अपने साथियों/पत्नियों के संबंध में पुरुष काफी भिन्न विषयों पर फोन करते हैं जैसे कि संभोग के समय दर्द, अनियमित और/या पीड़ादायक माहवारी, गर्भधारण में समस्याएं, गर्भनिरोधक विकल्प इत्यादि।

चूंकि हैल्पलाइन पर फोन करने वालों के लिए अपनी पृष्ठभूमि के बारे में जानकारी देना आवश्यक नहीं है, इसलिए तारशी के आंकड़ों में कॉलरों की विवाहित स्थिति और आयु जैसे विवरण हमेशा शामिल नहीं होते।

कॉलरों के लिए जिस विषय के लिए वे सेवा प्राप्त करना चाहते हैं उसके अलावा कोई भी अन्य जानकारी देना अनिवार्य नहीं है। करीब 2000 कॉलरों ने अपने व्यवसाय का उल्लेख किया है, उसमें से करीब 22% छात्र थे। इसके अतिरिक्त, सरकारी कर्मचारियों और व्यावसायिकों (डॉक्टर, वकील और इंजीनियरों), शिक्षाविदों, घर संभालने वालों, व्यापार करने वालों और घरेलू काम करने वालों ने भी सेवा का लाभ उठाया है।

34.7% फोन पहली बार फोन करने वालों से हैं जबकि 41.7% फोन उनसे जिन्होंने पहले भी फोन किया है। करीब 24% केसों में, यह

जानकारी उपलब्ध नहीं है कि फोन करने वाले ने पहले भी फोन किया है या नहीं। ऐसा कई कारणों से है, उदाहरण के लिए, फोन करने वाले व्यक्ति नहीं बताना चाहते कि उन्होंने पहले भी फोन किया है या वे अचानक बीच में या परामर्शदाता द्वारा यह जानकारी प्राप्त करने से पहले फोन काट देते हैं।

फोन करने वालों की आयु

यद्यपि फोन करने वालों की आयु 12 से 76 वर्षों के बीच है, 68% 30 वर्ष से कम आयु के हैं।

आंकड़े दर्शाते हैं कि 42.6% फोन 15 से 24 वर्ष के बीच की आयु के लोगों से आते हैं।

तालिका 1 : कॉलरों का आयु संबंधित वितरण

कॉलरों का आयु समूह	**कॉलों की संख्या**	**प्रतिशत**
15 वर्षों से कम	133	0.30%
15 से 19 वर्ष	5416	12.34%
20 से 24 वर्ष	13313	30.33%
25 से 29 वर्ष	11111	25.32%
30 से 34 वर्ष	3528	8.04%
35 से 39 वर्ष	1664	3.79%
40 से 44 वर्ष	983	2.24%
45 से 49 वर्ष	310	0.71%
50 वर्षों से अधिक	336	0.77%
आयु ज्ञात नहीं	7094	16.16%
कुल	43888	100.00%

तालिका 2 : कॉलरों की विवाहित स्थिति

हैल्पलाइन पर बात करने के दौरान कॉलरों के लिए अपने बारे में कोई जानकारी देना आवश्यक नहीं है। इसलिए उनकी वैवाहिक स्थिति के बारे में जानकारी अक्सर रिकार्ड नहीं होती (यदि उन्होंने स्वयं जानकारी न दी हो) और यदि रिकार्ड होती भी है, तो यह जानने का कोई तरीका नहीं है कि दी गई जानकारी सही है। निम्नलिखित आंकड़ों को पढ़ते समय यह बात ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है:

कॉलर की वैवाहिक स्थिति	**कॉलों की संख्या**	**प्रतिशत**
एकल	16924	38.56%
विवाहित	18815	42.87%
अलग/तलाकशुदा/विधवा या विधुर	68	0.15%
विवाहित स्थिति अज्ञात	8081	18.41%
कुल	43888	100.00%

कॉलों की विषयवस्तु

कॉलर की पहली चिंता/प्रश्न को रिकार्ड किया जाता है और मात्रात्मक विश्लेषण के लिए उपयोग किया जाता है। यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि जैसे–जैसे कॉल आगे बढ़ती जाती है कॉलर अधिक प्रश्नों की ओर बढ़ सकते हैं। तो, उदाहरण के लिए, कॉलर यह पूछ कर शुरुआत कर सकता/ती है कि सेवा का समय क्या है या सेवा किस बारे में है (पहले प्रश्न को 'तारशी के बारे में जानकारी' के अंतर्गत लिखा जाएगा)। यह सूचना दी जाने के बाद, वे यौनिकता से संबंधित अपने संशय, चिंताओं या समस्याओं के बारे में जितने चाहे प्रश्न पूछ सकते हैं।

चिंता/प्रश्न किस तरह का है और कॉलर के पास कितना समय एवं एकांतता है, उसके आधार पर कॉलों की अवधि में भिन्नता होती है – समय एक मिनट से कम या कभी एक घंटे से ऊपर भी हो जाता है। हैल्पलाइन सेवा जानकारी, परामर्श और रेफरल प्रदान करती है। हैल्पलाइन की रेफरल सूची में स्त्रीरोग–विज्ञान विशेषज्ञ, मनोवैज्ञानिक, मनोचिकित्सक, और महिलाओं, बाल यौनिक दुर्व्यवहार, एच.आई.वी. और कानूनी सहायता आदि पर कार्य करने वाली गैर सरकारी संस्थाएं शामिल हैं।

तालिका 3 : तारशी हैल्पलाइन पर कॉलर की पहली चिंता/प्रश्न

कॉलर की पहली चिंता/प्रश्न	कुल	प्रतिशत
यौनिकता पर सामान्य जानकारी	15371	35.02%
अपने/साथी के लिए – यौन संबंधित समस्याएं	9028	20.57%
गर्भनिरोधक	5276	12.02%
तारशी सेवा के बारे में, सामान्य प्रश्न	3668	8.36%
रिश्तों/संबंधों की समस्याएं	3485	7.94%
एच.आई.वी./एड्स	3440	7.84%
माहवारी की समस्याएं	1517	3.46%
रेफरल जानकारी	1047	2.39%
जन्म दे पाने की अक्षमता/'बांझपन'	562	1.28%
यौनिक संबंध में दुर्व्यवहार/कौटुम्बिक दुष्कर्म (इंसेस्ट)	275	0.63%
स्त्रीरोग–विज्ञान संबंधित समस्याएं	184	0.42%
कानूनी जानकारी	35	0.08%
कुल	43888	100.00%

यौनिकता पर सामान्य जानकारी में यौन कितनी बार करना है, हस्तमैथुन, लिंग का आकार, आकृति और रंग, ख़तना/सुन्नत, स्तनों का आकार और आकृति, स्राव, कौमार्य, पहली बार यौन, समलैंगिकता, ट्रॉंसजेंडर के मुद्दे, आनंद में वृद्धि करना, असामान्य यौनिक अभ्यास/तरीके, यौनिक स्थितियों और तकनीकों आदि पर जानकारी सम्मिलित होती है।

हैल्पलाइन के सामने आने वाली यौनिकता से जुड़ी आम भ्राँतियां और गलत अवधारणाएं

स्वप्न दोष कमज़ोरी/बीमारी की निशानी है जिसके लिए इलाज की आवश्यकता होती है।

कॉनड्म से आनंद कम हो जाता है।

कॉनड्म केवल उनके लिए है जो गर्भ से बचना चाहते हैं।

हस्तमैथुन हानिकारक है – इससे कमजोरी, मुँहासे एवं आँखों के नीचे काले घेरे, जनन क्षमता में कमी और यौनिक समस्याएं पैदा हो जाती हैं।

महिलाएं हस्तमैथुन नहीं करती।

कुंवारी लड़की के साथ यौन करने से एस.टी.डी. और एड्स ठीक हो जाता है।

योनि झिल्ली (हाइमन) सही सलामत होना कौमार्य की निशानी है/'सुहागरात' को जिस महिला का रक्तस्राव नहीं होता वह कुंवारी नहीं होती।

जब पति की इच्छा हो तब यौन के लिए तैयार रहना पत्नी का कर्तव्य है।

मुख मैथुन से गर्भधारण हो सकता है (यदि वीर्य निगल लिया जाए)

गुदा मैथुन से गर्भधारण नहीं होता। गुदामैथुन सुरक्षित यौन है।

समयपूर्व स्खलन का दवाओं द्वारा 'इलाज' किया जा सकता है।

लिंग–योनि संभोग ही केवल 'असली' यौन है।

दो पुरुषों के बीच यौन, यौन नहीं बल्कि 'मस्ती' है।

मुख/गुदा मैथुन को गलत/बुरा/वर्जित समझा जाता है, लेकिन फिर भी इसका प्रचलन है, परिणाम स्वरूप ग्लानि और शर्म की भावना पैदा होती है।

यौनिक समस्याओं में यौनिक प्रदर्शन से संबंधित चिंताएं, यौन के दौरान/पश्चात दर्द, यौन में घटती रुचि, साथी का यौन में रुचि न होना/असंतुष्ट होना आदि शामिल है। यह बात जानना रुचिकर है कि मालूम होता है दोनों साथियों के बीच यौनिक विषयों में बातचीत का गंभीर अभाव है। जो कॉलर वर्षों से शादीशुदा हैं वे भी बताते हैं कि उन्होंने अपने पति/पत्नी से स्वयं के यौनिक मुद्दों पर चर्चा नहीं की है। अपनी चिंताओं और प्रश्नों पर उन्हें अपने

आत्मीय साथियों की बजाय किसी अजनबी से फोन पर चर्चा करना अधिक आसान लगता है।

पुरुषों में समय से पूर्व स्खलन और महिलाओं में पीड़ादायक यौन सबसे आम यौनिक समस्या बताई गई है। कई पुरुष अपने प्रदर्शन की तुलना उससे करते हैं जो वे 'ब्लू फिल्मों' ('कामोत्तेजक' फिल्मों) में देखते हैं या जो उन्होंने अपने मित्रों की 'सफलताओं' के बारे में सुना हुआ है। कई सारे पुरुषों और महिलाओं को यह ज्ञात नहीं होता कि जहाँ पुरुष शीघ्र उत्तेजित हो जाते हैं और कामआनंद की चरम सीमा प्राप्त कर लेते हैं, वहीं महिला को (शारीरिक तौर से, और अक्सर मनो–सामाजिक–सांस्कृतिक कारणों, समाजीकरण आदि से) ऐसा करने में कहीं अधिक समय लगता है। ऐसा प्रतीत होता है कि यौनिक प्रतिक्रियाओं में भिन्नताओं के बारे में जानकारी/ज्ञान के अभाव से असंतुष्टि बढ़ती है।

उपचार प्राप्त करने में प्राथमिकताएं

कॉलर अक्सर समय से पहले स्खलन, स्वप्नदोष और कुछ मामलों में तो अपनी हस्तमैथुन की इच्छा पर नियंत्रण करने में सहायता के लिए दवाएं बताने के निवेदन के साथ फोन करते हैं।

कुछ बताते हैं कि इन समस्याओं के लिए स्वदेशी स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं से परामर्श प्राप्त किया है और बताते हैं कि उस "इलाज" से कोई लाभ नहीं हुआ।

कुछ कॉलरों ने सही "इलाज" की खोज में काफी सारा पैसा खर्च किया जो उनके लिए आसान नहीं था।

गैर–चिकित्सा उपायों को उतनी गंभीरता से नहीं लिया जाता जितना कि चिकित्सा संबंधित को।

कॉलरों को दवाओं या डॉक्टर के पास जाने की सलाह अधिक अच्छी लगती है बजाय इसके कि उन्हें यौनिक क्रियाशीलता को बेहतर बनाने के लिए अपने व्यवहार में बदलाव के लिए बताया जाए।

गर्भधारण, गर्भनिरोध एवं गर्भपात से संबंधित प्रश्नों में – गर्भधारण कैसे होता है, गर्भनिरोध की विभिन्न प्राकृतिक, रसायनिक और अवरोध विधियां, गर्भधारण टेस्ट/जाँच, आपातकालीन गर्भनिरोधक और गर्भपात – शामिल हैं।

एच.आई.वी. और एड्स से संबंधित प्रश्नों में – एच.आई.वी. क्या है, यह एड्स से अलग कैसे है, प्रसार के मार्ग, डर और गलत अवधारणाएं, टेस्टिंग और इलाज के बारे में प्रश्न शामिल हैं।

रिश्तों/संबंधों के मुद्दों में मुख्यतः प्रश्न आत्मीय साथियों/पति–पत्नी के बीच आपसी बातचीत और कुछ मामलों में सास–ससुर या विस्तृत परिवार के सदस्यों से संबंधित होते हैं।

हैल्पलाइन पर पुरुष और महिलाएं किस बारे में बात करते हैं

नीचे दिए गए आंकड़े उन छह मुख्य चिंताओं को दर्शाते हैं जिनके लिए पुरुष और महिलाएं फोन करते हैं। जैसा कि तालिका और परामर्शदाताओं के अवलोकलन से स्पष्ट नज़र आता है, पुरुषों के लिए यौनिक चिंताओं से बातचीत आरंभ करना आसान है जबकि महिलाएं आमतौर पर चिकित्सा और संबंधों की समस्याओं से शुरू करती हैं और फिर यौनिक मुद्दों पर जाती हैं। माहवारी संबंधित समस्या उन मुख्य छह चिंताओं में नहीं आती जिनके लिए पुरुष फोन करते हैं। इसी तरह एच.आई.वी. संबंधित समस्याएं भी महिलाओं की मुख्य छह चिंताओं में नहीं आती।

तालिका 4 : कॉलरों की प्रथम सरोकार में जेंडर संबंधित अंतर

कॉलरों का पहला प्रश्न	पुरुषों की संख्या	प्रतिशत
यौनिकता पर सामान्य जानकारी	13924	38.76%
अपने/साथी के लिए – यौन संबंधित समस्याएं	8487	23.63%
गर्भनिरोधक	3466	9.65%
तारशी सेवा के बारे में, सामान्य प्रश्न	3039	8.46%
एच.आई.वी./एड्स	2937	8.18%
रिश्तों/संबंधों की समस्याएं	1789	4.98%

कॉलरों का पहला प्रश्न	महिलाओं की संख्या	प्रतिशत
गर्भनिरोधक	1792	22.98%
रिश्तों/संबंधों की समस्याएं	1672	21.44%
यौनिकता पर सामान्य जानकारी	1400	17.95%
माहवारी संबंधित समस्याएं	796	10.21%
तारशी सेवा के बारे में, सामान्य प्रश्न	603	7.73%
अपने/साथी के लिए – यौन संबंधित समस्याएं	515	6.60%

तालिका 5 क–घ : तारशी हैल्पलाइन पर कॉलर की आयु और प्रथम सरोकार के अनुसार वितरण:

तालिका 5 क: विभिन्न प्रश्न की श्रेणियों के अंतर्गत भिन्न आयु के लोगों द्वारा किए गए फोनों की संख्या को दर्शाती है। उदाहरण के लिए, यौनिकता पर सामान्य जानकारी श्रेणी (कॉलम 2) के अंतर्गत कुल 15372 कॉलों का विश्लेषण किया गया, जिनमें से 5444 कॉलें 20 से 24 वर्ष आयु वाले लोगों की थीं।

तालिका 5 ख : विभिन्न प्रश्न की श्रेणियों के अंतर्गत भिन्न आयु के लोगों द्वारा किए गए फोनों का प्रतिशत दर्शाती है। उदाहरण के लिए, यौनिकता पर सामान्य जानकारी श्रेणी (कॉलम 2) के अंतर्गत कुल 15372 कॉलों का विश्लेषण किया गया, जिनमें से 35.4% कॉलें 20 से 24 वर्ष आयु वाले लोगों की थीं।

तालिका 5 ग : प्रत्येक आयु समूह में विशेष प्रश्नों के लिए किए गए फोनों की संख्या को दर्शाती है। अर्थात, 15 से 19 वर्ष आयु वालों के जिन 5416 कॉलों का विश्लेषण किया गया, 3088 प्रश्न यौनिकता पर सामान्य जानकारी से संबंधित थे।

तालिका 5 घ : प्रत्येक आयु समूह में विशेष प्रश्नों के लिए किए गए फोनों का प्रतिशत दर्शाती है। अर्थात, 15 से 19 वर्ष आयु वालों के 57.02% कॉलों का विश्लेषण किया गया, 3088 प्रश्न यौनिकता पर सामान्य जानकारी से संबंधित थे।

तालिका 5 क: विभिन्न प्रश्न की श्रेणियों के अंतर्गत भिन्न आयु के लोगों द्वारा किए गए फोनों की संख्या

आयु समूह	यौनिकता पर सामान्य जानकारी	यौनिक समस्याएं	गर्भनिरोधक संबंधित प्रश्न	माहवारी संबंधित प्रश्न	संक्रमण संबंधित प्रश्न	स्त्रीरोग–विज्ञान संबंधित प्रश्न	दुर्व्यवहार	जनन क्षमता संबंधित प्रश्न
<15 वर्षों	59	2	4	19	10	0	9	1
15–19 वर्ष	3088	346	426	272	533	5	81	5
20–24 वर्ष	5444	2444	1854	489	1155	51	102	120
25–29 वर्ष	3211	3268	1690	356	732	55	26	244
30–34 वर्ष	890	1039	471	128	238	20	12	94
35–39 वर्ष	377	526	128	46	100	17	3	33
40–44 वर्ष	157	182	42	34	55	4	3	5
45–59 वर्ष	77	96	12	24	21	3	2	2
>50 वर्षों	90	112	10	6	11	1	1	2
अज्ञात	1979	1012	639	143	585	28	36	56
कुल	15372	9027	5276	1517	3440	184	275	562

तालिका 5 ख: विभिन्न प्रश्न की श्रेणियों के अंतर्गत भिन्न आयु के लोगों द्वारा किए गए फोनों का प्रतिशत

आयु समूह	यौनिकता पर सामान्य जानकारी	यौनिक समस्याएं	गर्भनिरोधक संबंधित प्रश्न	माहवारी संबंधित प्रश्न	संक्रमण संबंधित प्रश्न	स्त्रीरोग–विज्ञान संबंधित प्रश्न	दुर्व्यवहार	जनन क्षमता संबंधित प्रश्न
<15 वर्षों	0.38%	0.02%	0.08%	1.25%	0.29%		3.27%	0.18%
15–19 वर्ष	20.09%	3.83%	8.07%	17.93%	15.49%	2.72%	29.45%	0.89%
20–24 वर्ष	35.42%	27.07%	35.14%	32.23%	33.58%	27.72%	37.09%	21.35%
25–29 वर्ष	20.89%	36.20%	32.03%	23.47%	21.28%	29.89%	9.45%	43.42%
30–34 वर्ष	5.79%	11.51%	8.93%	8.44%	6.92%	10.87%	4.36%	16.73%
35–39 वर्ष	2.45%	5.83%	2.43%	3.03%	2.91%	9.24%	1.09%	5.87%
40–44 वर्ष	1.02%	2.02%	0.80%	2.24%	1.60%	2.17%	1.09%	0.89%
45–59 वर्ष	0.50%	1.06%	0.23%	1.58%	0.61%	1.63%	0.73%	0.36%
>50 वर्षों	0.59%	1.24%	0.19%	0.40%	0.32%	0.54%	0.36%	0.36%
अज्ञात	12.87%	11.12%	12.11%	9.43%	17.01%	15.22%	13.09%	9.96%
कुल	15372	9027	5276	1517	3440	184	275	562

तालिका 5 ग: प्रत्येक आयु समूह में विशेष प्रश्नों के लिए किए गए फोनों की संख्या

आयु समूह	यौनिकता पर सामान्य जानकारी	यौनिक समस्याएं	गर्भनिरोधक संबंधित प्रश्न	माहवारी संबंधित प्रश्न	संक्रमण संबंधित प्रश्न	स्त्रीरोग–विज्ञान संबंधित प्रश्न	दुर्व्यवहार	जनन क्षमता संबंधित प्रश्न	कुल
<15 वर्षों	59	2	4	19	10	0	9	1	133
15–19 वर्ष	3088	346	426	272	533	5	81	5	5416
20–24 वर्ष	5444	2444	1854	489	1155	51	102	120	13313
25–29 वर्ष	3211	3268	1690	356	732	55	26	244	11111
30–34 वर्ष	890	1039	471	128	238	20	12	94	3528
35–39 वर्ष	377	526	128	46	100	17	3	33	1664
40–44 वर्ष	157	182	42	34	55	4	3	5	983
45–59 वर्ष	77	96	12	24	21	3	2	2	310
>50 वर्षों	90	112	10	6	11	1	1	2	336
अज्ञात	1979	1012	639	143	585	28	36	56	7095

तालिका 5 घ: प्रत्येक आयु समूह में विशेष प्रश्नों के लिए किए गए फोनों का प्रतिशत

आयु समूह	यौनिकता पर सामान्य जानकारी	यौनिक समस्याएं	गर्भनिरोधक संबंधित प्रश्न	माहवारी संबंधित प्रश्न	संक्रमण संबंधित प्रश्न	स्त्रीरोग–विज्ञान संबंधित प्रश्न	दुर्व्यवहार	जनन क्षमता संबंधित प्रश्न
<15 वर्षों	44.36%	1.50%	3.01%	14.29%	7.52%		6.77%	0.75%
15–19 वर्ष	57.02%	6.39%	7.87%	5.02%	9.84%	0.09%	1.50%	0.09%
20–24 वर्ष	40.89%	18.36%	13.93%	3.67%	8.68%	0.38%	0.77%	0.90%
25–29 वर्ष	28.90%	29.41%	15.21%	3.20%	6.59%	0.50%	0.23%	2.20%
30–34 वर्ष	25.23%	29.45%	13.35%	3.63%	6.75%	0.57%	0.34%	2.66%
35–39 वर्ष	22.66%	31.61%	7.69%	2.76%	6.01%	1.02%	0.18%	1.98%
40–44 वर्ष	15.97%	18.51%	4.27%	3.46%	5.60%	0.41%	0.31%	0.51%
45–59 वर्ष	24.84%	30.97%	3.87%	7.74%	6.77%	0.97%	0.65%	0.65%
>50 वर्षों	26.79%	33.33%	2.98%	1.79%	3.27%	0.30%	0.30%	0.60%
अज्ञात	27.89%	14.26%	9.01%	2.02%	8.25%	0.39%	0.51%	0.79%

ऊपर दी गई तालिकाओं से यह स्पष्ट है कि :

- अधिकांश फोन 20 से 24 वर्ष आयु के लोगों से प्राप्त हुए हैं और यौनिकता पर सामान्य जानकारी से संबंधित जानकारी पर थे। (इस आयु समूह से प्राप्त 35.4% फोन यौनिकता से संबंधित जानकारी के लिए थे)। यह इस आयु समूह में यौनिकता से संबंधित जानकारी के लिए जिज्ञासा और अभाव को दर्शाते हैं।
- ऊपर दी गई आयु समूहे से छोटे (15 से 19 वर्ष आयु – 20%) और इस आयु समूह से बड़े (25 से 29 वर्ष आयु – 20.8%) भी यौनिकता से संबंधित जानकारी चाहते हैं।
- कुल फोन करने वालों में से 25 से 29 वर्ष आयु समूह, फोन करने वाला दूसरा बड़ा समूह है (25.3%)।
- 25 से 29 वर्ष आयु समूह में यौनिक समस्याएं सूची में सबसे ऊपर हैं (यौनिक समस्याओं के लिए प्राप्त फोनों में 36.2% कॉलें 25 से 29 वर्ष आयु के लोगों से हैं)।
- ऊपर दी गई आयु समूह से छोटे और बड़े लोगों की भी यौनिकता से संबंधित चिंताएं हैं। (यौनिक समस्याओं पर 27% कॉलें 20 से 24 वर्ष आयु के लोगों और 11.5% 30 से 34 वर्ष आयु के लोगों से हैं)।
- 20 से 24 वर्ष आयु के लोगों (35.1%) और 25 से 29 वर्ष आयु के लोगों (32%) के बीच गर्भनिरोध से संबंधित चिंता भी काफी महत्वपूर्ण चिंताओं में से एक है)।

ये आंकड़े निम्नलिखित संकेत देते हैं:

- लोगों को यौनिकता और अपने शरीर के बारे में बुनियादी सही जानकारी पर पहुँच प्राप्त नहीं है और हाँलाकि ये ऐसे मुद्दे हैं जिनके साथ सभी इंसानों को जीवन में कभी न कभी जूझना पड़ता है।
- जो जानकारी उन्हें मिलती है वह आमतौर पर अधूरी या सही नहीं होती क्योंकि यौनिकता पर जानकारी के स्रोत होते हैं 'ब्लू फिल्में' ('कामोत्तेजक' फिल्में), गलत सूचना वाले दोस्त या आजकल इंटरनेट साइटें।
- सभी आयु समूहों (12 वर्ष और 70 वर्ष से अधिक आयु) और पृष्ठभूमियों के लोग इस जानकारी को खोज रहे हैं। हालाँकि, सबसे अधिक फोन 15 से 29 वर्ष आयु समूह के लोगों से आते हैं।
- बुनियादी यौन शिक्षा का अभाव लोगों को असूचित चुनावों की ओर ले जाता है जिसके कारण लोगों को एच.आई.वी. समेत, गर्भधारण या संक्रमण जैसे अनचाहे परिणामों का सामना कर पड़ सकता है। जहाँ कॉलों का गुणवत्तापूर्ण विश्लेषण इस रिपोर्ट के कार्यक्षेत्र नहीं है और उससे बाद में निपटा जाएगा, आरंभिक विश्लेषण और परामर्शदाताओं का अवलोकन इस तथ्य की ओर संकेत करते हैं। उदाहरण के लिए, कुछ कॉलर यह सुन कर आश्चर्यचकित होते हैं कि अनचाहे गर्भ और संक्रमण के लिहाज से गुदा मैथुन सुरक्षित नहीं है। ज़ाहिर है एच.आई.वी. रोकथाम कार्य में ऐसी गलतधारणाओं पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है।

फोन करने वालों की प्रतिसूचना (फीडबैक)

कॉलर ही फोन की बातचीत को आगे बढ़ाएं इसके लिए परामर्शदाता प्रशिक्षित होते हैं और वे प्रश्न तभी पूछते हैं जब वो कॉलर के प्रश्न से संबंधित हो। हैल्पलाइन सेवा में गुमनामी की सुविधा की विशेषता के कारण, कॉलरों से प्रतिसूचना प्राप्त करने के रास्ते बहुत कम हो जाते हैं क्योंकि:

- कॉलर अचानक फोन काट देते हैं और हो सकता है दोबारा कभी फोन न करें।
- वे फोन करें लेकिन यह न बताएं कि उन्होंने पहले भी फोन किया है।

- वे बताएं कि उन्होंने फोन किया है लेकिन ये न बताएं कि पिछली बार किस बात के लिए फोन किया था।
- कभी–कभी वे भूल जाते हैं कि पिछली बार उन्होंने कब और किस बात के लिए फोन किया था।

हालाँकि कुछ मामलों में, हमें कॉलरों से प्रतिसूचना भी मिलती है, जिनमें से कुछ का विवरण नीचे दिया गया हैः

- एक 18 वर्षीय अंग्रेजी बोलने वाला लड़का स्त्री व पुरुष जननांगों पर जीव–विज्ञान जानकारी और प्रजनन तंत्र एवं उसके कार्यों पर जानकारी देने के लिए परामर्शदाता को धन्यवाद देना चाहता था। वह दिल्ली के एक जानेमाने स्कूल में कक्षा 12 में विज्ञान का छात्र है।
- एक 28 वर्षीय हिन्दी बोलने वाले विवाहित पुरुष ने कहा 'आपकी सहायता के लिए बहुत धन्यवाद' – पत्नी ने पहली बार उसके प्रति काफी प्यार जताया।
- एक 26 वर्षीय हिन्दी बोलने वाला विवाहित पुरुष तारशी का बहुत आभारी था और उसने कहा जब भी उसे 'सही' जानकारी की आवश्यकता होती है, वह तारशी को फोन करता है।
- एक 26 वर्षीय महिला जो हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में बोलती थी उसे गर्भधारण को कैसे रोका जाए इस पर जानकारी चाहिए थी। उसने कहा कि जल्दी ही उसकी शादी होने वाली है और वह तुरंत बच्चे नहीं चाहती... उसने कहा कि दी गई जानकारी के लिए वह तारशी की शुक्रगुज़ार है।

- एक 28 वर्षीय हिन्दी बोलने वाले विवाहित पुरुष ने तारशी के बारे में जानकारी मांगी 'अगर आप बुरा न मानें'। जब जानकारी दी गई, उन्होंने कहा 'अच्छा ये सोशल सर्विस है' और परामर्शदाता को बहुत–बहुत धन्यवाद दिया।
- एक 25 वर्षीय हिन्दी बोलने वाले एकल पुरुष ने परामर्शदाता को बहुत धन्यवाद दिया और कहा, 'भगवान आपका भला करे'।
- एक 22 वर्षीय महिला जो हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में बोलती थी उसने कहा कि 'आपकी सुविधा बहुत अच्छी है'।
- एक 48 वर्षीय हिन्दी बोलने वाले विवाहित पुरुष ने सहायता प्रदान करने के लिए तारशी को धन्यवाद दिया। उन्होंने यह भी कहा, 'कोई मेरी बात इतने ध्यान से नहीं सुनता जितना कि आपने सुना'।
- एक 49 वर्षीय हिन्दी बोलने वाले विवाहित पुरुष ने सेवा को धन्यवाद दिया और कहा, 'बहुत अच्छी हैल्पलाइन चला रहे हैं आप'।

प्रतिसूचना और आभार की अभिव्यक्ति बातचीत के दौरान या फोन के अंत में आती है, इसे कॉलर के प्रथम सरोकार के तौर पर रिकार्ड नहीं किया जाता और इसलिए वर्तमान में हैल्पनाइन पर 'धन्यवाद' कॉलों की सही संख्या बताना संभव नहीं है।

कॉलर हैल्पलाइन सेवा के बारे में कैसे सुनते हैं

वर्षों से तारशी हैल्पलाइन का प्रचार विभिन्न माध्यमों से किया जाता है, जिनमें से सबसे अधिक प्रभावशाली एफ.एम. रेडियो रहा है। जहाँ तारशी ने प्रिंट मीडिया में अधिक विज्ञापन नहीं दिए, हैल्पलाइन या उसके द्वारा संबोधित मुद्दों पर लिखे गए लेखों में हैल्पलाइन का नम्बर अक्सर दिया गया है।

- 39% कॉलों में, कॉलरों ने बताया कि हैल्पलाइन के बारे में उन्होंने दोस्तों और जान–पहचान वालों से सुना।
- 29.6% कॉलों में, हैल्पलाइन की जानकारी का स्रोत एफ.एम. रेडियो था।
- 11% कॉलरों ने बताया कि हैल्पलाइन का नम्बर अखबार/पत्रिकाओं से मिला।
- अभी हाल में कॉलरों को हैल्पलाइन के बारे में जानकारी इंटरनेट के माध्यम से मिल रही है (तारशी वेबसाइट और सर्च इंजनों के माध्यम से)।

निष्कर्ष

अंत में, यह समीक्षा बताती है कि तारशी टेलिफोन हैल्पलाइन बड़ी संख्या में शहरी निवासियों द्वारा प्रयोग की जाती है। कॉलर आमतौर पर पुरुष होते हैं, हालाँकि जिन समस्याओ पर चर्चा होती है वे हमेशा पुरुषों की समस्याएं नहीं होती; पुरुषों की पहुँच आसान होने (गतिशीलता के साथ–साथ तारशी जैसी सेवा का लाभ उठाने के लिए पुरुषों पर सामाजिक प्रतिबंध कम होते हैं) के परिणामस्वरूप पुरुष कॉलरों की संख्या अधिक है।

फोन करने वालों में हिन्दी बोलने वालों का अनुपात अधिक है। जीवन के सभी क्षेत्रों से कॉलरों ने हैल्पलाइन पर हिन्दी में फोन किया है। इस सेवा की स्वीकार्यता का आकलन उन लोंगों की टिप्पणियों से किया गया जिन्होंने दी गई सलाह पर प्रतिसूचना देने के लिए वापस फोन किया और जिन्होंने फोन के दौरान भी प्रतिसूचना दी।

कॉलों से पता चलता है कि यौनिक निर्णय निजी मूल्यों, इच्छाओं, नैतिकताओं और संकोचो, और संबंधों एवं सामाजिक दबावों की पृष्ठभूमि के आधार पर लिए जाते हैं। ये अत्यंत आत्मीय और कठिन निर्णय होते हैं जो व्यक्तियों को करने पड़ते हैं और अधिकतर इनके सामाजिक परिणाम दूरगामी होते हैं।

ऐसे स्थान बहुत कम हैं जहाँ व्यक्ति अपने इस तरह के मुद्दों से जूझने के लिए सहायता प्राप्त कर सकते हैं। यौनिकता के बारे में बताना आसान नहीं होता। गलत व्याख्या और विकृति की गुंजाइश किसी भी संवाद में होती है, ऐसा तब और भी अधिक होता है जब स्वयं विषय शर्म और डर से भरा हुआ हो।

चूंकि यौन विभिन्न शारीरिक अंगों को मशीनी तरीके से एक के ऊपर एक चढ़ाने से कहीं अधिक है, लोगों की भावनाओं, कल्पनाओं, भूमिकाओं और अपेक्षाओं को संबोधित करना होगा। लोगों के बीच यौनिक संबंध सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदर्भों में घटते हैं जो असमान जेंडर और संबंधों की सत्ता पर आधारित होते हैं।

यौनिकता पर स्पष्ट जानकारी को लोगों से सांस्कृतिक तौर पर असंगत कह कर दूर रखना, सभी लोगों के जीवन और अधिकारों के लिए अहितकर है।

यह अनिवार्य है कि यौनिकता शिक्षा की ओर किसी भी प्रयास में ज्ञात बुनियादी वास्तविकताओं को शामिल किया जाए। यौनिकता के बारे में इस तरीके के बात करना, जिसका प्रयास उसे जोश और इच्छाओं से अलग रखना होता है, न केवल बेकार की बात होगी, बल्कि यह गलत धारणाओं और भेदभावों को स्थायी बनाएगी। हमें ज़रूरत है ऐसे यौनिकता कार्यक्रमों की जो लोगों की विभिन्न आवश्यकताओं की

पूर्ति करे, और, जो इस पूर्वधारणा पर आधारित न हों कि यौनिकता केवल एक प्रकार की होती है।

जानकारी के अतिरिक्त, लोगों को यौनिकता के विषय से जुड़ी समझ को स्पष्ट करने में सक्षम होना चाहिए ताकि उनके अपने जीवन के संदर्भ में इसके मायने हों। ऐसा कई परस्पर बातचीत के विभिन्न तरीकों से किया जा सकता है जैसे टेलिफोन हैल्पलाइनें, नुक्कड़ नाटक, कार्यशालाएं, स्कूल आधारित कार्यक्रम इत्यादि।

सभी आयु के लोगों को अपनी यौनिकता और प्रजनन स्वास्थ्य सरोकारों के बारे में जानकारी और इन आवश्यकताओं के लिए उचित सेवाएं प्राप्त करने का अधिकार है। तारशी हैल्पलाइन कॉलरों को ज़रूरी सेवा प्रदान करती है और यह सेवा तारशी की अन्य सभी कार्यक्रमों को सूचित करती रहती है। जाँच परिणाम बताते हैं कि प्रशिक्षित और संवेदनशील परामर्शदाताओं द्वारा सेवा प्रदान करने वाली टेलिफोन हैल्पलाइनें शहरी भारतीयों, विशेषकर युवाओं के बीच यौनिकता जानकारी के लिए महत्वपूर्ण आवश्यकता की कमी को पूरा कर सकती हैं।

जो संकेतिक–संदेश दिए जाते हैं वे भी उतने ही महत्वपूर्ण होते हैं जितनी कि संदेशों की स्पष्ट विषयवस्तु। डर और दण्ड पर आधारित संदेशों की प्रभावशीलता सीमित होती है – एक सीमा के बाद, कोई नहीं सुनता। सुरक्षित रहने में कुछ आनंदों को त्यागना या कम से कम उससे जुड़े जोखिमों को घटाना शामिल होता है। देखभाल करने में ऊर्जा और शायद लोगों को अन्य आनंदमय गतिविधियों के बारे में बताने के द्वारा प्रोत्साहन की जरूरत होती है। इसके लिए ऐसे दृष्टिकोण की आवश्यता है जो यौनिकता को जीवन के अभिन्न और पुरस्कृत करने वाले अंश के तौर पर मान्यता दे।

संदर्भिका

आचार्य आर. और जीजीभॉय एस. (2007) एडवर्स हैल्थ आउटकम्स् ऑफ फिज़ीकल एन्ड सेक्सुअल वॉयलेन्स विदीन मैरेजः एक्सपीरीयन्सेस ऑफ यंग वूमेन इन महाराष्ट्र, इंडिया। पॉपूलेशन काउनसिल, नई दिल्ली, भारत।

चंदीरमानी आर. (2003) सेक्सुअलीटी एडूकेशन एण्ड पब्लिक पॉलीसी। हवाना, क्यूबा में मार्च 10–14, 2003 में वर्ल्ड एसोसिएशन ऑफ सेक्सोलोजी द्वारा आयोजित 16वें वर्ल्ड कांग्रेस ऑफ सेक्सोलोजी में प्रस्तुत लेख।

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार (2007) राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण – 3. http://www.nfhsindia.org/pdf/IN.pdf

महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, भारत सरकार (2007) स्टेडी आनॅ चाईल्ड एब्यूजः भारत 2007, http://www.crin.org/docs/childabuseindia.pdf

यू एन ऐडस् (2002) एच.आई.वी./एडस् काउनसलिंग, जस्ट ए फोन कॉल अवे : फोर केस स्टेडीज ऑफ टेलिफोन हाटलाईन्स http://data.unaids.org/publications/IRC-pub02/JC817-phonecall_en.pdf

आभार

तारशी हैल्पलाइन के सभी पूर्व और वर्तमान परामर्शदाताओं का धन्यवाद – आ.च., बी.भ., ए.तु., गु.श., ज.न., ज.स., प.ग., पा.कु., प्र.न., रा.च., श., सु.कु., श.स.दे., श.व., वी.जी.स. और जा.ख.।

अरुन्धती पॉलीन गोम्स्, अज़ीमा फैजुनिस्सां, लोपामुद्रा पॉल और प्रभा नागराज को आंकड़ों के विश्लेषण, अनगिनत तालिकाएं और विचारों को आकार देने तथा रिपोर्ट लेखन में सहायता के लिए। शिरीन जीजीभॉय और राधिका चंदीरमानी को रिपोर्ट की समीक्षा तथा महत्वपूर्ण प्रतिसूचना (फीडबैक) देने के लिए।

तारशी के सभी कार्यकर्ताओं, विशेषरूप से जैनेट सुनीता को उनकी संपादकीय सहायता के लिए। तारशी के प्रत्येक कर्मचारी और वालंटियर का, जिन्होंने बड़ी मेहनत से वर्षों से एकत्रित हाथ से लिखे आंकड़ों को कंप्यूटर में अंकित किया।

सुनीता भदौरिया का इस रिपोर्ट के हिन्दी अनुवाद के लिए। गुंजन शर्मा और रूपम शर्मा को इस अनुवाद पर प्रतिसूचना (फीडबैक) के लिए। शरना दस्तूर का इस प्रकाशन को डिज़ाइन करने के लिए।

मैकाआर्थर फाउंडेशन का, 1995 में फैलोशिप देने के लिए, जिसने तारशी हैल्पलाइन को एक वास्तविकता बनाया।

वर्षों से उदारतापूर्वक सहायता प्रदान करने के लिए फोर्ड फाउंडेशन का।

तारशी

तारशी (टॉकिंग अबाउट रीप्रोडक्टिव एण्ड सेक्स्यूअल हैल्थ इसूज़) दिल्ली, भारत में स्थित एक पंजीकृत गैर सरकारी संस्था है, जो यौनिकता, यौनिक एवं प्रजनन स्वास्थ्य एवं अधिकार के मुद्दों पर कार्यरत है। तारशी का मानना है कि सभी व्यक्तियों को यौनिक खुशहाली तथा सकारात्मक एवं आनन्ददायक यौनिकता का अधिकार है।

तारशी का प्रयास लोगों को डर, संक्रमण और यौनिक एवं प्रजनन स्वास्थ्य समस्याओं से स्वतंत्र और एक गरिमामय जीवन जीने में सक्षम बनाना है। इसके लिए तारशी लोगों के जीवन में यौनिक एवं प्रजनन स्वास्थ्य विकल्पों के विस्तार की दिशा में कार्य करती है। इस लक्ष्य (विज़न) को प्राप्त करने के लिए तारशी निम्नलिखित माध्यमों से कार्य करती है:

हैल्पलाइन
यौनिकता, यौनिक एवं प्रजनन स्वास्थ्य के मुद्दों पर जानकारी, परामर्श और रेफरल प्रदान करना।

जन शिक्षा
यौनिकता के मुद्दों पर जागरूकता पैदा करने के लिए स्कूलों व कालेजों में सत्रों, अभियानों और सार्वजनिक आयोजनों द्वारा।

यौनिकता एवं अधिकार इंस्टीट्यूट
क्रिया (क्रिएटिंग रिर्सोसेस फॉर एम्पावरमेंट इन एक्शन) की सहभागिता में दो–सप्ताह की अवधि का एक वार्षिक परिकल्पनात्मक कोर्स आयोजित करना, जिसका फोकस यौनिकता और अधिकारों के मिलन–बिन्दु (इंटरफेस) पर है। अधिक जानकारी के लिए, कृप्या www.sexualityinstitute.org देखें।

प्रकाशन
बच्चों से लेकर इस क्षेत्र में कार्यरत गैर सरकारी संस्थाओं जैसे विभिन्न श्रेणी के पाठकों के लिए यौनिकता के अलग–अलग मुद्दों पर प्रकाशनों द्वारा।

प्रशिक्षण
हैल्पलाइन परामर्श कौशल और यौनिकता, प्रजनन स्वास्थ्य एवं अधिकारों के मुद्दों पर।

यौनिकता पर दक्षिण एवं दक्षिणपूर्व एशिया संसाधन केंद्र (रिसोर्स सेंटर)
दक्षिण एवं दक्षिणपूर्व एशिया क्षेत्र में यौनिकता, प्रजनन स्वास्थ्य और यौनिक खुशहाली के मुद्दों पर ज्ञान में वृद्धि और छात्रवृत्ति। अधिक जानकारी के लिए, कृप्या www.asiasrc.org देखें।